व्यवहारवादी दृष्टिकोण

- राजनीतिविज्ञान के अध्ययन के क्षेत्र में 1950 के तूफान में व्यवहारवादी तथा 1969 ई० के बाद उत्तर व्यवहारवादी दृष्टिकोण का उदय हुआ।
- व्यवहारवादी उत्तर व्यवहारवादी दृष्टिकोण के अनुसार मनुष्य के राजनीतिक व्यवहार का अध्ययन उसकी सम्पूर्णता में किया जाना चाहिए क्योंकि उसके सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक व सांस्कृतिक पहलुओं को पृथक-पृथक नहीं किया जा सकता।
- राजनीति के आधुनिक दृष्टिकोण के मुख्य समर्थकों में कैटलिन, लासवेल, कैपलान, डेविड ईस्टन, आमण्ड पॉवल, राबर्ट ए० डहल इत्यादि के नाम उल्लेखनीय है।
- व्यवहारवाद के पितामह डेविड ईस्टन के मतानुसार यह दृष्टिकोण वैज्ञानिक मनोदशा का प्रतिबिम्ब है।
- राबर्ट ए० डहल ने व्यवहारवाद को परम्परावादी पद्धति की सैद्धान्तिकता के विरुद्ध एक विरोध आन्दोलन कहा है।
- व्यवहारवादी उपागम में अध्ययन का केन्द्र बिन्दु संस्थाएँ न होकर व्यक्ति का राजनीतिक व्यवहार होता है।
- व्यवहारवादी यह अनुभव करते हैं कि मूल्यों, सिद्धान्तों तथा आदर्शों के आधार पर किया गया अध्ययन कल्पनात्मक होता है। इसलिए राजनीतिक अध्ययन तथा बोध व्यक्तिगत तथा सामूहिक व्यवहार के आधार पर ही सार्थक तथा उपयोगी हो सकते हैं।
- व्यवहारवाद की नींव ग्राहम वालास, आर्थर बेण्टले, चार्ल्स ई० मैरियम ने वर्तमान शताब्दी के प्रारम्भ में रखी थी।
- ग्राहम वालास ने सन् 1908 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'Human Nature in Politics'

मे राजनीति मे मनोवैज्ञानिक तत्वों जैसे भावनाएँ व्यक्तिगत रुझानों आदि के प्रभाव के अध्ययन पर बल दिया है

* इसी प्रकार सन 1908 मे ही प्रकाशित आर्थर बेन्टले की पुस्तक 'Process of Government' में भी राजनीतिक संगठनों व संस्थाओं के अध्ययन के ~~आधार~~ स्थान पर राजनीतिक प्रक्रियाओं के अध्ययन व विश्लेषण पर अधिक बल दिया है।

* सन 1925 मे चार्ल्स मेरियम ने अपनी पुस्तक 'New Aspects of politics' मे सैद्धान्तिक अध्ययन के स्थान पर व्यवहारवादी तथा वैज्ञानिक अध्ययन की संस्तुति की है।

* राजनीतिक व्यवहारवाद से सम्बन्धित उपर्युक्त विचारों को संकलित कर सन 1950 के दशक मे अमेरिका के राजनीति विज्ञान विषय के विद्वान डेविड ईस्टन ने एक व्यवस्थित सिद्धान्त के रूप मे व्यवहारवादी दृष्टिकोण का प्रतिपादन किया।

Pol-sc (Hons)
Part-I
Paper-I

Rama Kant pandey
S.R.A.P College
Bara chakiya
B.R.A.B.U (Muz)